

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 1

परिचय भाग 1

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह रूथ के माध्यम से जोशुआ पर अपनी शिक्षा में डॉ. डेविड हॉवर्ड हैं। यह सत्र संख्या एक है, जोशुआ का परिचय, भाग एक, जोशुआ, तिथि और लेखकत्व।

नमस्ते, मैं प्रोफेसर डेविड हॉवर्ड हूँ। मैंने हाल ही में मदरसा स्तर पर ओल्ड टेस्टामेंट पढ़ाने का अपना 36वां वर्ष पूरा किया है, ज्यादातर सेंट पॉल, मिनेसोटा में बेथेल सेमिनरी में। मैं वास्तव में कुछ महीने पहले ही सेवानिवृत्त हुआ हूँ और विदेशों में और यहां-वहां अमेरिका में एक सहायक के रूप में पढ़ाना जारी रखूंगा, लेकिन जीवन भर पुराने नियम का अध्ययन करना, अनिवार्य रूप से, शैक्षणिक कार्य करना एक बड़ा सौभाग्य रहा है। मैं इस बारे में एक शब्द कहूंगा कि मैं पुराने नियम में कैसे और क्यों आया।

मुझे आशा है कि यह आपके लिए अच्छा हो सकता है। मैं चर्च में बड़ा हुआ हूँ। मेरे माता-पिता मिशनरी थे। मैं अपने जीवन के पहले 15 वर्ष लैटिन अमेरिका में बड़ा हुआ। मुझे ईश्वरीय शिक्षकों, पादरियों और माता-पिता द्वारा सिखाया गया था। जब मैं वयस्क हुआ, तो मुझे एहसास हुआ कि मैं नए टेस्टामेंट के बारे में बहुत कुछ जानता था और पुराने के बारे में बहुत कुछ नहीं, भले ही मैंने इसे कई बार पढ़ा था।

इसलिए, जब प्रभु ने मुझे बाइबल का अध्ययन करने के लिए ग्रेजुएट स्कूल में बुलाया, तो मैंने फैसला किया कि शायद ओल्ड टेस्टामेंट ही वह जगह है जहां मुझे जाना चाहिए, बस अपने लिए, इसके बारे में थोड़ा सीखना चाहिए। मैंने इसमें करियर बनाने के इरादे से ग्रेजुएट स्कूल में प्रवेश नहीं लिया। वास्तव में मैंने कॉलेज में बायोलॉजी प्री-मेड की पढ़ाई की थी, लेकिन मैं मेड स्कूल में नहीं गया, और यह एक तरह से पहचान का संकट था।

लेकिन मैं रोमांचित हूँ कि प्रभु ने मुझे इस दिशा में बुलाया। इसलिए, मैंने व्यक्तिगत कारणों से पुराने नियम को चुना, और एक चीज़ ने दूसरे को जन्म दिया। मुझे वास्तव में पढ़ाने के लिए बुलाया गया, और मेरे प्रोफेसरों ने कहा, यदि आप ऐसा करते हैं, तो आपको डॉक्टरेट प्राप्त करने की आवश्यकता है।

इसलिए, मैंने मिशिगन विश्वविद्यालय में निकट पूर्वी अध्ययन में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की, संदर्भ में पुराने नियम और भाषाओं और इतिहास का अध्ययन किया, और 80 के दशक की शुरुआत में बेथेल सेमिनरी में पढ़ाना शुरू किया। मैंने कुछ वर्षों तक शिकागो क्षेत्र के ट्रिनिटी डिवाइनिटी स्कूल और न्यू ऑरलियन्स बैपटिस्ट सेमिनरी में पढ़ाया, और पिछले 18 वर्षों तक फिर से यहीं बेथेल में पढ़ाया। मुझे जोशुआ की पुस्तक का कई अलग-अलग संदर्भों में अध्ययन करने का सौभाग्य मिला है।

मेरे मास्टर और डॉक्टर कार्य में तीन अलग-अलग कक्षाओं में, हमने जोशुआ की किताब हिब्रू में पढ़ी, इसलिए मुझे इसका अनुवाद करने का काफी अनुभव था। मैंने पुस्तक के बारे में लेख लिखना शुरू किया और अंततः मुझे पुस्तक पर एक टिप्पणी लिखने के लिए कहा गया, और पुस्तक में गहराई से जाने और कई चीजें सीखने में सक्षम होना एक बड़ा सौभाग्य था। तो, यह श्रृंखला जोशुआ की किताब से होकर गुजरेगी।

यह एक अद्भुत पुस्तक है, और मुझे वास्तव में इसे पढ़ाने, इसका अध्ययन करने का सौभाग्य मिला है, मैं आशा करना चाहता हूँ कि जब हम आएंगे और पुस्तक का परिचय देंगे तो यह आपके लिए एक अच्छा अनुभव होगा। इसलिए, अगर मुझे किताब की पहली छाप के बारे में पूछना हो, तो मैं अपनी कक्षाओं में ऐसा करता हूँ, और कई बार लोग कहेंगे, अच्छा, यह लड़ाई के बारे में है। मेरे पास गाना है, जोशुआ फिट द बैटल ऑफ जेरिको, और यही धारणा हमारे पास है, और विजय, और फिर भूमि।

और निःसंदेह यह सब सच है। पुस्तक में बहुत अधिक एकाग्रता है और कनानी लोगों के साथ लड़ाई और संघर्ष पर ध्यान केंद्रित किया गया है, लेकिन मुझे लगता है कि कभी-कभी हम, अपनी आंखों से, लड़ाई को मानवीय प्रयासों के रूप में सोचते हैं, और मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि हम इसे होते हुए देखेंगे यहाँ पाठ्यक्रम, यह वास्तव में है, लड़ाइयों को भगवान की आंखों के माध्यम से देखा जाता है, और भगवान लड़ाई के पीछे प्राथमिक अभिनेता और प्रस्तावक हैं, और इज़राइल, एक तरह से, एक दर्शक की तरह है। भगवान हमेशा जीत दे रहा है।

यदि आप इसके बारे में सोचते हैं, तो जोशुआ की किताब में कभी भी कोई वास्तविक लड़ाई नहीं हुई है जहां इज़राइल बेहतर सैन्य बल या अपने स्वयं के प्रयासों के आधार पर लड़ाई जीतता है। यह ईश्वर है जो चमत्कार करता है, ईश्वर युद्धों का निर्देशन करता है, या जो भी हो। और फिर, निःसंदेह, वास्तव में, लड़ाई में 24 अध्यायों में से केवल पांच, पुस्तक के 24 अध्यायों में से छह, अध्याय 6 से 12 तक का ही उपयोग होता है।

मेरा अनुमान है कि ये सात अध्याय हैं। पुस्तक का शेष भाग अध्याय 1 से 5 में उन लड़ाइयों की तैयारी है, और फिर भूमि का वितरण और भगवान से वादों की पूर्ति है। तो, भूमि, पुस्तक कनान की भूमि पर ईश्वर से एक उपहार के रूप में, आराम की जगह के रूप में, और विरासत की जगह के रूप में, और एक जगह के रूप में कहीं अधिक केंद्रित है, जहां इसराइल, आगे बढ़ते हुए, अपना जीवन जीने में सक्षम होगा आने वाली सदियों के लिए जीवन।

पुस्तक यहोशू नाम के व्यक्ति के साथ समाप्त होती है जो भगवान ने कई भाषणों में जो किया है उस पर प्रतिबिंबित करता है, और फिर से, यह इन लड़ाइयों को एक प्रकार का आध्यात्मिक आवरण देता है। एक और चीज़ जिसके बारे में लोग अक्सर लड़ाई के संदर्भ में सोचते हैं वह है विनाश, इस्राएलियों द्वारा कनानियों का विनाश। और यह काफी कठोर लगता है, और इस्लामिक जिहाद और सभी काफिरों का सफाया करने की चाहत रखने वाले कई कट्टरपंथी इस्लामी समूहों के बारे में आधुनिक समय की खबरों के आलोक में आज इसकी विशेष तात्कालिकता हो गई है।

और इसलिए, यह तुलना की गई है कि बाइबल अनिवार्य रूप से एक ही चीज़, एक ही प्रकार की चीज़ की अनदेखी कर रही थी। मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण अंतर हैं, और हम अनुक्रम में बाद के खंड में उनके बारे में बात करेंगे, लेकिन यह एक और चिंता का विषय है जो लोगों को किताब में आते ही महसूस होता है। लेकिन मुझे आशा है कि हम इससे आगे देख सकते हैं, और इस पुस्तक में ईश्वर के कुछ महान कार्यों को देख सकते हैं, और जान सकते हैं कि ईश्वर वास्तव में कौन है, जिस तरह से उसने अपने लोगों के साथ व्यवहार किया, और वास्तव में, कनानियों, विदेशी लोगों के साथ भी। .

यह न केवल दुष्ट कनानियों की सज़ा और संघर्ष की किताब है, बल्कि इसमें कनानियों की कुछ प्रेरणादायक कहानियाँ भी हैं जिन्हें बचा लिया गया था। तो यह पुस्तक के अवलोकन का एक प्रकार से परिचय है। तो चलिए किताब के बारे में ही बात करते हैं।

यदि आपके पास बाइबल है, तो इन खंडों का अनुसरण करना सहायक होगा। और इसलिए, मैं आपसे यहोशू की पुस्तक की ओर मुड़ने के लिए कहूंगा, और हम सीधे इसमें उतरेंगे। हम उस व्यक्ति और संदर्भ, तारीख के बारे में कुछ विशिष्ट बातों को देखने जा रहे हैं, और फिर हम देखेंगे ऐतिहासिक संदर्भ, यहां मेरे पीछे के मानचित्र का जिक्र है।

हम इसका भी उल्लेख करेंगे जिसे मैं साहित्यिक संदर्भ कहूंगा, यह इस विशिष्ट बिंदु पर बाइबिल के सिद्धांत, पुराने नियम के सिद्धांत में कैसे फिट बैठता है। तो ये कुछ चीजें होंगी जिन पर हम गौर करेंगे। और फिर पहला अध्याय शुरू करने से पहले हम उस पर गौर करेंगे जो मैं पुस्तक के समग्र विषय के रूप में देखता हूँ, और फिर कुछ सहायक विषयों पर।

इसलिए, यदि आप अपनी बाइबिल के पृष्ठ एक या अध्याय एक पर देखते हैं, तो आप आम तौर पर शीर्षक पृष्ठ पर देखते हैं, यह जोशुआ या जोशुआ की पुस्तक कहेगा। और निःसंदेह, पुस्तक का शीर्षक मुख्य पात्र, उस समय इज़राइल के नेता, जोशुआ नाम के व्यक्ति से लिया गया है। वह मूसा का उत्तराधिकारी था, और अब इज़राइल का नया नेता था।

हिब्रू में उसका नाम येहोशुआ है, और इसका अर्थ है भगवान बचाता है, या भगवान बचाता है, या यहोवा, भगवान का व्यक्तिगत दिव्य नाम बचाता है या बचाता है। दिलचस्प बात यह है कि पुराने टेस्टामेंट के ग्रीक अनुवाद में, उस नाम को येशुस के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो कि नए टेस्टामेंट में यीशु के नाम के समान है। और यहोशू का मूल नाम, हम पाते हैं कि संख्या अध्याय 13 में, उसका मूल नाम होशे था, जो बहुत समान है, जिसका अर्थ मोक्ष या मुक्ति है।

लेकिन हम संख्या 13, श्लोक 16 में पढ़ते हैं, कि मूसा ही वह व्यक्ति था जिसने यहोशू का नाम बदलकर प्रभु उद्धारकर्ता, प्रभु बचाता है कर दिया था। यह दिलचस्प है कि अक्सर हम पेंटाटेच को ईश्वर, लोगों और महान नेता मूसा के महान आंदोलनों को देखने के चश्मे से पढ़ते हैं। लेकिन जब आप वापस आते हैं और इसे यहोशू नाम के व्यक्ति के लेंस से देखते हैं, तो वह पेंटाटेच में कई बार आता है।

सबसे पहले, वह निर्गमन अध्याय 17 में पाया जाता है, जहां वह मूसा का सहायक और करीबी विश्वासपात्र है। निर्गमन अध्याय 33 के अनुसार, वह मूसा की युवावस्था से ही उसकी सहायता करता रहा था। निर्गमन 24 में वह मूसा के साथ सिनाई पर्वत तक गया था।

वह वादा किए गए देश में भेजे गए 12 जासूसों में से एक था, और वह उन दो में से एक था जो सकारात्मक रिपोर्ट के साथ वापस आए। और इसलिए, उसे और कालेब को वादा किए गए देश में प्रवेश करने की अनुमति दी गई थी। वहाँ एक महत्वपूर्ण समारोह है जहाँ उसे वास्तव में मूसा के उत्तराधिकारी के रूप में नामित किया गया है, और यह संख्याओं की पुस्तक, अध्याय 27 में है।

और यह एक विस्तृत मार्ग है जहां फोकस उसके कमीशन पर है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसमें भगवान की आत्मा निवास करती है, संख्या 27, पद 8। कमीशनिंग सेवा एक बहुत ही गंभीर कार्यक्रम था जिसमें पूरी मंडली ने भाग लिया था। एलीएजेर, महायाजक, अध्यक्षता कर रहा था, और समारोह के दौरान, उसे मूसा के हाथ रखकर मूसा का अधिकार दिया गया था।

और बाद में उसे एलीएजेर के साथ भूमि वितरित करने का काम सौंपा गया। तो, यहोशू की पुस्तक में ही, हम कई महत्वपूर्ण स्थानों को देखते हैं जहां भूमि का वितरण दिया जा रहा है, और यह यहोशू, नेता और एलीएजेर, पुजारी हैं, जो यह कर रहे हैं। तो, यह एक गंभीर मामला है जिसमें उनके दो, आध्यात्मिक नेता और, एक अर्थ में, धर्मनिरपेक्ष नेता, जब वे भूमि पर पहुंचते हैं, तो भगवान की मंजूरी होती है।

व्यवस्थाविवरण 31 में जब मूसा अपने जीवन के अंत पर पहुंचा, तो हमने पढ़ा कि उसने सभी को याद दिलाया कि यहोशू नामित उत्तराधिकारी था। उन्होंने यहोशू पर मजबूत और साहसी होने का आरोप लगाया, और ये वही शब्द हैं जिनका उपयोग जोशुआ के अध्याय 1 में किया गया है जब भगवान उससे समान शब्दों में बात करते हैं। और जब मूसा मरने वाला होता है, तो यहोशू उसके साथ मिलापवाले तम्बू में जाता है, मैं तर्क दूंगा कि वह मिलापवाले तम्बू से अलग तम्बू है।

लेकिन वह वहां उसके साथ है, और भगवान वहां उन दोनों के साथ है। और फिर, अंत में, व्यवस्थाविवरण 34 में, अध्याय मूसा की मृत्यु के बारे में बताता है, और यह मूसा को एक सर्वोत्कृष्ट नेता के रूप में मूल्यांकित करता है, जिसके जैसा इसराइल में कभी कोई भविष्यवक्ता नहीं हुआ, व्यवस्थाविवरण के अंतिम तीन छंदों में मूसा की तरह 34, इसमें श्लोक 9 में यहोशू का उल्लेख है। नून का पुत्र यहोशू ज्ञान की भावना से परिपूर्ण था। क्योंकि मूसा ने उस पर हाथ रखा था, और इस्राएल के लोगों ने उसकी बात मानी, और यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दी थी वैसा ही किया।

तो, जाहिर है, मूसा महान नेता है, और वह पुराने नियम के शेष इतिहास में एक महान व्यक्ति है। जोशुआ उनके नामित उत्तराधिकारी हैं। हम देखेंगे कि कैसे, एक अर्थ में, यहोशू नेता की नौकरी में विकसित हुआ।

उसकी तुलना कभी भी मूसा से नहीं की गई है, लेकिन जोशुआ की किताब, पेंटाटेच में, वह स्पष्ट रूप से वह है जिसे मूसा का उत्तराधिकारी बनना है और एक तरह से, उसकी जगह भरना है, भले ही शायद वह था कानून और इस तरह की चीजें देने के अर्थ में यह नेता नहीं है। किताब से स्पष्ट है कि भगवान कई बार उनके साथ थे। यह कहता है, लगभग एक दर्जन बार, यह कहता है कि भगवान यहोशू के साथ थे जैसे वह मूसा के साथ थे।

संपूर्ण राष्ट्र ने उनकी आज्ञा का पालन करने और उनकी सेवा करने की शपथ ली। उनके मंत्रालय की शुरुआत में, अध्याय 1 में, जब उन्होंने कहा कि हमें जो कुछ भी आदेश दिया गया है हम करेंगे, जैसे हमने मूसा की आज्ञा का पालन किया, वैसे ही हम आपकी भी आज्ञा का पालन करेंगे। पुस्तक के अंत में, अध्याय 24 में, उन्होंने उसका अनुसरण करने की शपथ लेने की उसकी चुनौती का पालन किया।

हम अध्याय 22 से 24 में यहोशू को अंतिम भाषणों में अधिकारपूर्वक कार्य करते हुए देखते हैं। वह बड़े अधिकार के साथ बोलता है। फिर, जब पुस्तक समाप्त होती है, तो उसे भगवान के सेवक के रूप में संदर्भित किया जाता है।

मैं कहूंगा कि पुस्तक में नौकरी के विषय में एक दिलचस्प बात आगे बढ़ रही है। शायद यह इसके बारे में बात करने की जगह होगी। यदि आपको कहीं और भेज दिया गया है तो कृपया जोशुआ 1 की ओर रुख करें।

हम श्लोक 1 में देखेंगे, यह कहता है, प्रभु के सेवक मूसा की मृत्यु के बाद, और यहोशू की पुस्तक में लगभग 16, 18 बार मूसा को प्रभु का सेवक कहा गया है। उसे पूरे पेंटाटेच की तुलना में यहोशू में अधिक बार बुलाया गया है। तो, मूसा भगवान का सेवक है।

यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू से, जो मूसा का सहायक, या मूसा का सहायक था, कहा। यह दिलचस्प है, कि यहोशू मूसा का उत्तराधिकारी है, नामित उत्तराधिकारी है, भगवान ने उसे आशीर्वाद दिया है, इत्यादि। परन्तु यहाँ पुस्तक का लेखक अभी तक उसे प्रभु का सेवक नहीं कह रहा है।

मूसा यहोवा का सेवक है, परन्तु यहोशू केवल मूसा की सहायता है। एक अर्थ में, उसे पूरा अधिकार नहीं दिया गया है, या कम से कम पुस्तक के लेखक द्वारा नहीं दिया गया है। यहोशू की पुस्तक में मूसा को 16 से 18 बार प्रभु का सेवक कहा गया है, लेकिन अंत तक यहोशू को कभी भी ऐसा नहीं कहा गया।

आप किताब के अंत तक पहुँचते हैं जब हमारे पास वह चीज़ होती है जिसे हम जोशुआ की मौत की सूचना कहते हैं जब वह मर चुका है और दफना दिया गया है। यह कहता है, अध्याय 24, पद 29, इन बातों के बाद, नून का पुत्र यहोशू, जो यहोवा का दास था, मर गया। 110 वर्ष पुराना होने के नाते, और ऐसा ही चलता रहता है।

तो, एक तरह से, यहोशू को प्रभु के सेवक के रूप में नामित होने से पहले मरना पड़ा, लेकिन किताब अंततः उसे वह सम्मान देती है, जैसा हमने मूसा को दिया था। तो, यहोशू नामक व्यक्ति

के बारे में इतना ही काफी है। आइए पुस्तक, लेखकत्व और पुस्तक की रचना तिथि के बारे में बात करें।

मूलतः, पुस्तक गुमनाम है। किताब में ऐसा कोई दावा नहीं है कि असल में पूरी किताब किसने लिखी। पुस्तक किसने लिखी, इसके बारे में पवित्रशास्त्र में कहीं भी कोई दावा नहीं है, इसलिए हम वास्तव में नहीं जानते हैं।

रब्बियों ने इस पुस्तक का लेखक यहोशू नामक व्यक्ति को बताया। कुछ रब्बियों ने पुस्तक के कुछ हिस्सों को बाद के हाथ से लिखा हुआ देखा, विशेषकर यहोशू की मृत्यु के बारे में। कुछ रब्बियों ने यहोशू की पुस्तक के लेखन का श्रेय सैमुअल को दिया।

पुस्तक में कुछ घटित होने या आज तक कुछ होने के कई संदर्भ हैं, और इसलिए कुछ लोग यह कहने के लिए प्रेरित होंगे कि यह जोशुआ नहीं है, यह बाद में कोई है, शायद सैमुअल, इत्यादि। अब, स्पष्ट रूप से यहोशू ने पुस्तक के कुछ भाग लिखे हैं क्योंकि, उदाहरण के लिए, अध्याय 24, श्लोक 26 कहता है कि यहोशू ने इन बातों को परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में दर्ज किया है, जो उस वाचा का संदर्भ देता है जो लोगों ने शकेम में बनाई थी। इसलिए, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने किताब का कुछ हिस्सा रिकॉर्ड किया है।

यह पूरी बात किसने लिखी, हम वास्तव में नहीं जानते। मेरा विचार है कि इंजीलवादियों, हम सही भी हैं, को बाइबल को सच्चा और ऐतिहासिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने वाला तथा इसमें जो कहा गया है उसे सटीक समझने में निहित स्वार्थ है। मुझे लगता है, कभी-कभी हम अपने पहियों को घुमाते हैं, जब हम उन चीजों का अनुमान लगाने की कोशिश करते हैं जिनकी पुष्टि बाइबल नहीं करती है।

उदाहरण के लिए, हममें से बहुत से लोग पेंटाटेच के मोज़ेक लेखकत्व की पुष्टि करेंगे क्योंकि बाइबल कई स्थानों पर पुष्टि करती है कि मूसा अधिकांश या सभी पेंटाटेच के लेखक थे। हम पॉल की पत्रियों इत्यादि के पॉलिन लेखकत्व का बचाव करेंगे। लेकिन जब किताबें गुमनाम होती हैं, तो मुझे ऐसा लगता है कि शायद यह अनुमान लगाने की कोशिश करना एक दिलचस्प अभ्यास है कि लेखक क्या हो सकते हैं, लेकिन यह वास्तव में अनुमान लगाने का एक अभ्यास है और यह पुस्तक के लिए आवश्यक नहीं है।

यदि यह आवश्यक होता, तो मेरा विचार यह होता कि पवित्र आत्मा ने लेखकों को यह इंगित करने के लिए प्रेरित किया होता कि लेखक कौन थे या लेखक कौन था। रचना की तारीख के संदर्भ में, फिर से, हम वास्तव में नहीं जानते हैं लेकिन आज तक के वे संदर्भ ऐसे लगते हैं जैसे वे जोशुआ के जीवनकाल से पहले के हैं। वस्तुतः, पुस्तक के अंत में यही स्थिति है।

यह कहता है, श्लोक 31, अध्याय 24, इस्राएल यहोशू के जीवन भर और उन पुरनियों के जीवन भर यहोवा की सेवा करता रहा, जो यहोशू के जीवित रहने के बाद भी यहोवा द्वारा इस्राएल के लिए किए गए सभी कार्यों को जानते थे। तो, यह स्पष्ट रूप से यहोशू के समय के बाद पुस्तक के अंतिम रूप में स्पष्ट रूप से लिखा गया था, लेकिन फिर भी, हम वास्तव में नहीं जानते हैं। इस दिन तक के कई संदर्भ शायद सैमुअल के समय का संकेत देते हैं।

अध्याय 6 में राहाब के आज तक जेरिको में रहने का संदर्भ है और जब तक वह स्वयं कई शताब्दियों तक जीवित नहीं रही, ऐसा लगता है कि यह जोशुआ की पुस्तक की घटनाओं के बाद काफी जल्दी लिखा गया था। हालाँकि, मैं इसके बारे में पूरी तरह से निश्चित नहीं हूँ क्योंकि होशे की पुस्तक, अध्याय 3, श्लोक 5 में कहा गया है कि होशे के समय में, जो 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व, 700 के दशक में था, इसमें डेविड के घर का उल्लेख है या इसका उल्लेख नहीं है डेविड के घराने में, इसमें डेविड के जीवित होने का उल्लेख है और यह स्पष्ट रूप से डेविड के घराने, डेविड के वंश का संदर्भ है। तो, होशे में डेविड का संदर्भ स्पष्ट रूप से डेविड के वंशजों के लिए है और शायद यहाँ भी यही मामला है।

संक्षिप्त उत्तर यह है कि हम वास्तव में लेखन की तारीख भी नहीं जानते हैं। हम पुस्तक के ऐतिहासिक संदर्भ, पुस्तक की घटनाओं की तारीख, लेखन की तारीख बाद की हो सकती है, लेकिन घटनाओं की तारीख के बारे में बात करेंगे। आप यहां नक्शा देखें और चर्चा शुरू करने के लिए इसमें एक महत्वपूर्ण संदर्भ दिया गया है।

मुझे खेद है, मैं जोशुआ की तारीख से फिर से शुरुआत करूंगा और जोशुआ की किताब की सभी घटनाएं इस समझ पर निर्भर हैं कि मिस्र से पलायन की तारीख कब हुई। यहां इस बारे में एक बड़ी चर्चा है कि आपको साहित्य में दो प्रमुख तिथियां मिलेंगी, पारंपरिक तिथि 1 राजा 6, श्लोक 1 में एक प्रमुख संदर्भ पर निर्भर है, यदि आप उस पर ध्यान देना चाहते हैं तो मैं कुछ बातें कहूंगा। उसके बारे में।

तो, 1 राजा 6 में यह संदर्भ अब वर्षों बाद सुलैमान के दिनों का है जब सुलैमान मंदिर की नींव रख रहा था। यहां बताया गया है कि 1 राजा 6, श्लोक 1 "इज़राइल के लोगों के मिस्र देश से बाहर आने के 480वें वर्ष में।" ऐसा कहा जाता है कि सुलैमान ने इस्राएल पर राज्य करने के चौथे वर्ष में ज़िव महीने में, जो दूसरा महीना था, यहोवा का भवन बनाना आरम्भ किया। तो, यह हमें बता रहा है कि जब सुलैमान ने मंदिर की नींव रखी, यह सुलैमान की मृत्यु के 480 वर्ष बाद की बात है।

अब हम बहुत सटीकता से जानते हैं कि सुलैमान कब जीवित था और उसकी तारीख क्या रही होगी। उसके चौथे वर्ष में, यह लगभग 966 ईसा पूर्व 967 रहा होगा। और इस तरह, आप 480 साल पीछे जाते हैं और आप वर्ष 1446 ईसा पूर्व में पहुँचते हैं और इसलिए, पारंपरिक दृष्टिकोण यह रहा है कि इज़राइल मिस्र से बाहर आया और भूमि की ओर चला गया। 1446 में कनान के। और 40 साल बाद जब वे अंततः यहोशू के अधीन प्रवेश कर गए तो उनकी संख्या 1406 के आसपास रही होगी। 1400 उसके लिए एक अच्छी पूर्ण संख्या है।

समस्या यह है कि जब पुरातत्व ने लगभग 100 साल पहले, 20वीं सदी की शुरुआत में, मध्य पूर्व में चीज़ों को उजागर करना शुरू किया था। यह स्पष्ट हो गया कि पूरे पूर्वी भूमध्य सागर में विनाश की एक बड़ी परत थी, शहरों का विनाश, लोगों का विस्थापन और पलायन इत्यादि। और यह लगभग एक सभ्यता के पतन जैसा था और यह लगभग एक परमाणु युद्ध के परिणाम जैसा था कि जीवन को फिर से शुरू करना पड़ा। यह आमतौर पर 1200 ईसा पूर्व के आसपास का बताया गया है

हाल ही में शायद कुछ दशकों बाद 1100 के दशक में, लेकिन हम कहेंगे कि 1200 इसके लिए एक अच्छी गोल संख्या है, और इसे आमतौर पर पुरातत्वविदों द्वारा अब स्वर्गीय कांस्य युग के अंत के रूप में देखा जाता है। 1200 ईसा पूर्व, जिसे लौह युग कहा जाता है, उसकी शुरुआत से थोड़ा बाद का समय है। और इसलिए, जैसे-जैसे शहर उजागर होने लगे थे, उस समय विनाश की इन परतों में से कुछ का श्रेय कनान में शहरों को नष्ट करने के लिए आने वाले इस्राएलियों को दिया गया था।

1208 के आसपास मेरेनेटा के राजा के अधीन मिस्र के एक शिलालेख में इसराइल को कनान देश के लोगों के रूप में संदर्भित करने का एक संदर्भ है। तो, यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि मिस्रवासियों ने उन्हें मिस्र के बाहर के रूप में पहचाना और इससे इस विचार को बल मिलेगा कि शायद वे अभी-अभी बाहर आए थे। आलोचनात्मक विद्वता की मुख्यधारा में अच्छे इंजीलवादी हैं जो बाद की तारीख में जाएंगे। इंजीलवादी किसी भी तिथि के बीच लगभग समान रूप से विभाजित हैं। इसलिए, एक रूढ़िवादी विद्वान के रूप में आपकी विश्वसनीयता का कोई मुद्दा नहीं है कि आप किस तारीख के साथ जाते हैं। मेरा अपना विचार है कि कई कारणों से पहले की तारीख अधिक संभावित है। एक यह कि राजाओं में यह सन्दर्भ है। जो विद्वान इसे बाद में देखते हैं, वे इसे 480 वर्षों को एक प्रतीकात्मक संख्या के रूप में देखते हैं और शायद 40 वर्षों की पीढ़ियों के 12 चक्रों के बारे में सोचते हैं। तो, 12 गुणा 40 480 है और यदि आप एक पीढ़ी को वास्तविक पीढ़ी के रूप में देखते हैं, तो लोगों का जीवनकाल शायद 20 या 25 वर्ष के करीब होगा। हालाँकि आप इसे संक्षिप्त कर सकते हैं, मेरे विचार में जिस तरह से कविता पढ़ी गई है, वह एक बहुत ही सटीक तारीख है क्योंकि यह 480वें वर्ष के बारे में बात करती है जब लोग मिस्र से बाहर आए थे, 4थे वर्ष में ज़िव के महीने में सुलैमान के शासनकाल का दूसरा महीना था। . तो, ऐसा लगता है कि यह वास्तव में एक कैलेंडर तिथि बनने की कोशिश कर रहा है और एक प्रतीकात्मक संख्या का उपयोग नहीं कर रहा है, बल्कि हमें वर्षों, महीनों और यहां तक कि सटीकता के उस स्तर तक एक वास्तविक संख्या दे रहा है।

एक बात जो आप पलायन की तारीख की चर्चा में भी देख सकते हैं, वह यह है कि यदि आप न्यायाधीशों की पुस्तक में सभी न्यायाधीशों के वर्षों को जोड़ते हैं, तो अमुक न्यायाधीश बन गया और भूमि ने इतने वर्षों तक भूमि का न्याय किया। 40 साल या 80 साल तक आराम किया, आपको ऐसे नंबर मिलेंगे जो किसी भी श्रेणी में फिट से बड़े होंगे। आपके पास ऐसी संख्याएँ हैं जो यहोशू और किंग डेविड के बीच के 400 वर्षों से भी अधिक हैं। और इसलिए, किसी भी स्थिति में आपको न्यायाधीशों के शासनकाल को न्यायाधीशों के कार्यकाल तक सीमित करना होगा। मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि यदि आप न्यायाधीशों की पुस्तक को ध्यान से पढ़ेंगे तो हम देखेंगे कि न्यायाधीश थे, जरूरी नहीं कि व्यक्तिगत न्यायाधीश पूरी भूमि के लिए जिम्मेदार हों। कभी-कभी इस न्यायाधीश या उस न्यायाधीश के अधीन क्षेत्रीय संघर्ष होते हैं। और इसलिए, हो सकता है कि जो कुछ घटित हो रहा था उसमें वे ओवरलैपिंग कर रहे हों और कालानुक्रमिक रूप से लगातार नहीं हो रहे हों।

पलायन का कोई भी दृश्य, चाहे वह पहले का हो या बाद का, उनमें से कुछ संख्याओं को संपीड़ित करना होगा। और इसलिए, मेरा विचार है कि यह पहले की तारीख ही बेहतर तारीख है। इसलिए, मैं 1406 या 1400 के आसपास मूसा की मृत्यु का एक बार फिर से अंत देखूंगा।

जोशुआ का कार्यकाल संभवतः जोशुआ की किताब में घटनाओं की लंबाई का संदर्भ देता है, लगभग 30 साल, सक्रिय लड़ाइयों के 5-7 साल और फिर भूमि पर बसने के लिए लगभग 25 साल और इसी तरह। तो यह घटनाओं की तारीख के बारे में थोड़ा सा होगा।

मैंने यहां जो नक्शा बनाया है उसका उद्देश्य भौगोलिक और ऐतिहासिक संदर्भ दिखाना है, तो आइए मैं इसे समझाने की कोशिश करता हूँ, यह नक्शा पुराने नियम के 3000 साल के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है। तो, मेरे पास हिती थे, हिती साम्राज्य ने क्षेत्र के इस हिस्से में 1400 से 1200 ईसा पूर्व कुछ सौ वर्षों तक शासन किया था। असीरियन और बेबीलोनियन लगातार एक-दूसरे के साथ आगे-पीछे आ-जा रहे थे। एक समय था जब अश्शूरियों का प्रभुत्व था और इस मानचित्र पर अधिकांश चीजें असीरियन साम्राज्य के अधीन थीं। फिर उनकी किस्मत खराब हो गई और बेबीलोनियों की किस्मत चमक गई। अवधि के अंत में फारसियों ने बेबीलोनियों पर विजय प्राप्त की और उन्होंने लगभग 330 ईसा पूर्व में सिकंदर महान द्वारा निकट पूर्व पर विजय प्राप्त करने तक प्रभुत्व बनाए रखा।

मिस्रवासियों की शक्ति मुख्यतः तीसरी और दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व 3000 के दशक में थी, 2000 से लगभग 1000 तक। इसलिए यहां सब कुछ एक ही समय में समान शक्ति में विद्यमान नहीं है, यह लगभग 3000 वर्षों के पुराने नियम के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है। मैंने लाल रंग में बड़े अक्षरों में जो लेबल दिए हैं वे इन विभिन्न शताब्दियों में नीले रंग में प्रमुख विश्व साम्राज्य हैं। छोटी-छोटी क्षेत्रीय शक्तियाँ और राष्ट्र जिनकी पृष्ठभूमि में इज़राइल ने अपने पूरे इतिहास में अपना जीवन व्यतीत किया। तो, यह अराम है, राजधानी दमिश्क थी। इन देशों का आधुनिक नाम हरे रंग में है, यानी सीरिया और यह वही दमिश्क है जिसके बारे में हम इन दिनों समाचारों में सुनते हैं।

अम्मोनी जॉर्डन नदी के पूर्व में रहते थे, यह यहाँ का एक खराब नक्शा है, जॉर्डन उससे कहीं अधिक लंबा है। मोआबी मृत सागर के पूर्व में रहते थे, और एदोमी मृत सागर के दक्षिण-पूर्व में रहते थे। मिद्यानवासी यहाँ अरब रेगिस्तान के उत्तर-पश्चिमी भाग में थे। यह सिनाई प्रायद्वीप है, इस्राएली मिस्र से निकलकर सिनाई और कनान देश तक आए थे।

आखिरकार इब्राहीम उर से, शायद मेसोपोटामिया के दक्षिण में, कुछ लोगों ने इसे दूर उत्तर में प्रवासित किया, लेकिन यदि वह दक्षिण में है तो वह यहां हारान शहर में प्रवास करता है और यहीं से उसे देश में जाने के लिए बुलावा मिलता है। कनान.

तो, यह पृष्ठभूमि है। तो, आपको याद है उत्पत्ति में भगवान कहते हैं, इब्राहीम पहले से ही अपने पिता तेरह और उसके परिवार के साथ प्रवास कर रहा है और वे हारान में हैं। परमेश्वर इब्राहीम को वादा किए गए देश में जाने के लिए बुलाता है और इसलिए वह अपने परिवार को यहां ले

जाता है। इब्राहीम यहीं बसता है और उसके बेटे इसहाक और जैकब सभी यहीं रहते हैं। याकूब के 12 पुत्र यूसुफ, तुम कहानियाँ जानते हो।

वे अकाल के कारण मिस्र में पहुँच गये। मिस्र में 400 वर्षों की गुलामी के बाद फिरौन के घराने में यूसुफ का उत्थान हुआ और फिर लोगों को मिस्र से लाल सागर के पार लाने के लिए मूसा का उत्थान हुआ। सिनाई पर्वत के नीचे कहीं, उन्हें सिनाई पर्वत पर दस आज्ञाएँ और कानून मिलते हैं। आखिरकार वे कनान देश में जाने के लिए निकले। कनान की भूमि यहीं का यह सारा क्षेत्र होगा।

वे जासूसों को देश में भेजते हैं, संख्या 13 और 14। जासूस बुरी रिपोर्ट लेकर वापस आते हैं। लोग शिकायत करते हैं इसलिए भगवान उन्हें 40 वर्षों तक जंगल में भटकने की सजा देते हैं।

उस समय के अंत में वे जॉर्डन नदी के ठीक पूर्व में, जेरिको और यरूशलेम के पूर्व में समाप्त हो गए। यहीं पर व्यवस्थाविवरण की पुस्तक सामने आती है। व्यवस्थाविवरण में मूसा के अंतिम भाषण हैं। गिनती अध्याय 20 में किए गए पाप के कारण मूसा लोगों के साथ जॉर्डन पार नहीं करने जा रहा है। तो, आपके पास यहां मूसा के अंतिम भाषण हैं।

फिर जोशुआ की किताब में भी इसकी शुरुआत यहीं से होती है और फिर कार्रवाई हमें कनान में ले जाती है। यह दक्षिण और उत्तर की ओर खुलता है और लोग उस भूमि पर बस रहे हैं जिसका वादा भगवान ने किया था।

तो यह पुस्तक का एक प्रकार का ऐतिहासिक, भौगोलिक संदर्भ है। हम इसका और अधिक उल्लेख करने के लिए वापस आएँगे लेकिन यह उसका एक सामान्य परिचय है

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड और रूथ के माध्यम से जोशुआ पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या एक जोशुआ का परिचय भाग एक, जोशुआ, तिथि और लेखकत्व है।